ग़फ़लत का अन्जाम

1st-March-2018

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा। याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्त़ारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी। ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा हो। **फ़तावा शामी** में है **:** अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है)।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात में सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस की सौ ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, सत्तर आख़िरत की और तीस दुन्या की और **अल्लाह** करीम एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है। (جمع الجوامع للسیوطی، ۷/۱۹۹، حدیث: ۲۲۳۵۵)

तू ज़िन्दा है वल्लाह, तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ❖ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़फ़्लत का अन्जाम

क़ाज़िये कूफ़ा, मुह़म्मद बिन ग़स्सान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ईदे कुरबान के दिन मैं अपनी वालिदा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, तो मैं ने वहां फटे पुराने बोसीदा कपड़े पहने हुवे एक बुढ़िया को देखा । मुझे उस का अन्दाज़े गुफ़्तगू बहुत अच्छा लगा । मैं ने अपनी वालिदा से पूछा : येह औ़रत कौन है ? उन्हों ने फ़रमाया : येह तुम्हारी ख़ाला **आ़निया** है, जो हारून रशीद के वज़ीर जा'फ़र बिन यह़्या बरमकी की मां है । मैं ने उन्हें सलाम किया, तो उन्हों ने मेरे सलाम का जवाब दिया । मैं ने उन की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की और पूछा : आप की येह ह़ालत कैसे हुई ? तो उन्हों ने फ़रमाया : बेटा ! हम ने

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत में ज़िन्दगी गुज़ारी और वक़्त ज़ाएअ़ करने में लगे रहे, तो ज़माना हम से रूठ गया। मैं ने कहा : अपनी शानो शौकत का कोई वाक़िआ़ सुनाइये। कहने लगीं : ज़रूर ! एक छोटा सा वाक़िआ़ सुनाती हूं, उस से मेरी शानो शौकत का अन्दाज़ा लगा लेना। आज से तीन साल पहले ईदे कुरबान के मौक़अ़ पर मेरे पास चार सौ ओढ़नियां थीं, मेरे बेटे ने रस्म के त़ौर पर मेरे पास एक हज़ार चार सौ बकरों के सर और तीन सौ बैलों के सर भेजे, ज़ेवरात और लिबास वग़ैरा इन के इ़लावा थे, इस के बा वुजूद मेरा ख़याल था कि मेरा बेटा मेरा ना फ़रमान है और आज येह ह़ाल है कि मैं तुम्हारे पास दो बकरों की खालें लेने आई हूं ताकि उन का लिबास बनाऊं। क़ाज़ी साहिब फ़रमाते हैं कि उन की दास्ताने ज़वाल सुन कर मैं बहुत रन्जीदा हुवा और मेरी आंखों से आंसू रवां हो गए, उस वक़्त मेरे पास जो दीनार थे मैं ने उन्हें तोह़्फ़तन दे दिये।

(بَحْرُ الدُّمُوْعِ، الفصل السادس عشر، فی ذھاب اللذۃ ۔۔ الخ، ص۱۰۵)

नहीं दरकार वोह ख़ुशियां जो ग़फ़्लत का बनें सामां
अ़त़ा कर अपनी उल्फ़त, अपने प्यारे का तू ग़म मौला

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 99)

ग़फ़्लत के अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जो शख़्स दुन्यवी ने'मतों से दिल लगाता है, वोह अपनी आख़िरत के बारे में ग़फ़्लत का शिकार हो ही जाता है।

ग़फ़्लत क्या है ?

ग़फ़्लत से मुराद वोह भूल है जो इन्सान पर एह़तियात़ की कमी के बाइ़स त़ारी होती है। (बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 179) ग़फ़्लत बन्दे को गुनाहों पर दिलेर कर देती है, ग़फ़्लत बन्दे को नेकियों से दूर कर देती है, ग़फ़्लत (Carelessness) **अल्लाह** पाक की नाराज़ी का सबब बनती है। **अल्लाह** पाक ने हमें दुन्या में बे शुमार ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं। अच्छी तिजारत व मुलाज़मत **अल्लाह** पाक की ने'मत है, आ़लीशान मकान और उस में ढेरों सहूलिय्यात ने'मत हैं, उ़म्दा सुवारी भी अ़ज़ीम ने'मत है, मां-बाप

www.dawateislami.net

के लिये औलाद भी ने'मत है मगर याद रखिये ! किसी भी दुन्यावी ने'मत में ज़रूरत से ज़ियादा मश्ग़ूलिय्यत बाइसे ग़फ़्लत और नुक़्सान का सबब है। जैसा कि पारह 28, सूरतुल मुनाफ़िक़ून, आयत नम्बर 9 में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩

(پ۲۸، منافقون، ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल, न तुम्हारी औलाद, कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे, तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।*

इस आयते मुबारका में ईमान वालों को नसीहत की जा रही है कि ऐ ईमान वालो ! मुनाफ़िक़ों की त़रह़ तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दे और जो ऐसा करेगा कि दुन्या में मश्ग़ूल हो कर दीन को भुला देगा, माल की मह़ब्बत में अपने ह़ाल की परवाह न करेगा और औलाद की ख़ुशी के लिये आख़िरत की राह़त से ग़ाफ़िल रहेगा, तो ऐसे लोग ही नुक़्सान उठाने वाले हैं क्यूंकि उन्हों ने फ़ानी दुन्या के पीछे आख़िरत के घर की बाक़ी रहने वाली ने'मतों की परवाह न की।

(خازن، المنافقون، تحت الآیۃ: ۹، ۴/۲۷۴، مدارک، المنافقون، تحت الآیۃ: ۹، ص۱۲۴۵، ملتقطاً)

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! आज मुसलमानों की अ़मली ह़ालत बड़ी ख़स्ता होती जा रही है। माल की फ़रावानी की धुन में मगन और हुसूले माल की ख़ातिर हम मुख़्तलिफ़ मुमालिक का सफ़र तो करते हैं मगर चन्द क़दमों के फ़ासिले पर मस्जिद की ह़ाज़िरी से कतराते हैं, अपने मकानात की डेकोरेशन (Decoration) पर पानी की त़रह़ पैसा तो बहाते हैं मगर राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से जी चुराते हैं, ह़त्ता कि बा'ज़ लोग फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात की अदाएगी भी नहीं करते, दौलत में इज़ाफ़े के लिये मुख़्तलिफ़ गुर तो अपनाए जाते हैं मगर नेकियों में बरकत के मुआ़मले में सुस्ती से काम लेते हैं।

याद रखिये ! अभी वक़्त है ! ग़फ़्लत से बेदार हो कर हमें फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि मौत अचानक रौशनियों से जगमगाते कमरे में आराम देह बिस्तर से उठा कर कीड़े मकोड़ों से भरी अन्धेरी क़ब्र में

www.dawateislami.net

सुला दे और फिर चिल्लाते रह जाएं कि ऐ मालिक ! मुझे दोबारा दुन्या में भेज दे, वहां जा कर तेरी ख़ूब इ़बादत करूंगा, अपना सारा माल तेरी राह में लुटा दूंगा, पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ अदा करूंगा ।

याद रखिये ! उस वक़्त की चीख़ो पुकार उसे कोई फ़ाइदा न देगी क्यूंकि कुरआने पाक इस बारे में पहले ही से ख़बरदार कर चुका है । चुनान्चे, पारह 28, सूरतुल मुनाफ़िक़ून की आयत 10 और 11 में इरशादे रब्बुल इ़ज़्ज़त है :

وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۱۰ وَ لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَاؕ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۱

(پ۲۸،منافقون،۱۰۔۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता और हरगिज़* ***अल्लाह*** *किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए और* ***अल्लाह*** *को तुम्हारे कामों की ख़बर है ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि मौत के वक़्त इन्सान ग़फ़्लत से बेदार हो जाता है और वोह उस वक़्त बड़ा अफ़्सोस करता है कि **काश** ! मुझे थोड़ी सी मोहलत मिल जाती और मैं नेक अ़मल कर लेता, **काश** ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी को ग़फ़्लत में न गुज़ारा होता, **काश** ! मैं ने रब्बे करीम को राज़ी कर लिया होता लेकिन उस वक़्त पछताने से कोई फ़ाइदा नहीं होगा । लिहाज़ा अ़क़्लमन्द (Wise) वोही है जो अपनी ज़िन्दगी में ग़फ़्लत से बेदार रहते हुवे नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का मदनी चराग़ क़ब्र में साथ लेता जाए और यूं क़ब्र की रौशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा ।

www.dawateislami.net

माल तक़्सीम करने की भी मोह्लत न मिली

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की 417 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **''इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा''** सफ़ह़ा 389 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़्नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में से एक शख़्स ने माल जम्अ़ किया । जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया, तो बेटों से कहने लगा : मुझे मेरे मुख़्तलिफ़ अम्वाल दिखाओ । उस के पास बहुत से घोड़े, ऊंट और ग़ुलाम लाए गए । जब उस ने उन की त़रफ़ देखा, तो ह़सरत से रोने लगा । मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام ने उसे रोते हुवे देखा, तो कहा : क्यूं रो रहे हो ? उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे येह सब कुछ दिया है ! जब तक मैं तेरी रूह़ और बदन को एक दूसरे से जुदा न कर दूं, यहां से नहीं जाऊंगा । उस ने कहा : मुझे कुछ मोह्लत दीजिये कि मैं इस माल को तक़्सीम कर दूं । फ़िरिश्ते ने कहा : अब तुझे मोह्लत नहीं मिलेगी, तू ने येह काम अपनी मौत के आने से पहले क्यूं न किया । चुनान्चे, (फिर) मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ली ।

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख जान जा कर ही रहेगी याद रख
तेरी त़ाक़त, तेरा फ़न, ओ़ह्दा तेरा कुछ न काम आएगा सरमाया तेरा
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 711, 712)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अनोखी नदामत

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : एक बहुत बड़े वलिय्युल्लाह सख़्त बीमार थे, मैं उन की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा । मैं ने उन के इर्द गिर्द उन के शागिर्दों को बैठे हुवे देखा । वोह बुज़ुर्ग रो रहे थे । मैं ने अ़र्ज़ की : या शैख़ ! क्या आप दुन्या पर रो रहे हैं ?

www.dawateislami.net

फ़रमाया : नहीं ! बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूं । मैं ने कहा : आप तो इबादत गुज़ार शख़्स थे फिर नमाज़ें किस त़रह़ क़ज़ा हुईं ? फ़रमाया : मैं ने जब भी सजदा किया, तो ग़फ़्लत के साथ और जब सजदे से सर उठाया, तो ग़फ़्लत के साथ और अब ग़फ़्लत की ह़ालत में मर रहा हूं ।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 22)

मह्ज़ दा'वा बेकार है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि अल्लाह पाक के नेक बन्दे हर लम्ह़ा यादे इलाही में बसर करने और हर घड़ी फ़िक्रे आख़िरत में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद भी अपनी इबादतो रियाज़त को किसी ख़ातिर में न लाते और अल्लाह करीम की बे नियाज़ी से डरते हुवे गिर्या व ज़ारी करते मगर हम ग़फ़्लत के मारों का ह़ाल येह है कि अव्वल तो नेकियां करते नहीं और अगर कोई नेक काम कर लिया, तो जब तक 4 आदमियों के सामने अपनी नेक नामी की धाक न बिठा लें, चैन नहीं आता । अल्लाह करीम के नेक बन्दे गुनाहों से मह़फ़ूज़ होने के बा वुजूद हर वक़्त उस के ख़ौफ़ से थरथराते और आंसू बहाते हैं मगर हम ग़फ़्लत शिआ़र दिन, रात बे धड़क गुनाहों में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद भी ज़रा नहीं डरते और बातें ऐसी करते हैं कि हम जैसा कोई नेक नहीं ।

हमें इस ग़फ़्लत से झन्झोड़ने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : लोग तीन बातें सिर्फ़ ज़बानी करते हैं मगर अ़मल उस के ख़िलाफ़ करते हैं । (1) कहते हैं कि हम अल्लाह पाक के बन्दे हैं लेकिन काम ग़ुलामों जैसे नहीं बल्कि आज़ादों की त़रह़ अपनी मर्ज़ी के करते हैं । (2) कहते हैं कि अल्लाह पाक ही हमें रिज़्क़ देता है लेकिन उन के दिल दुन्या और सामाने दुन्या जम्अ़ किये बिग़ैर मुत़मइन नहीं होते और येह उन के इक़रार के सरासर ख़िलाफ़ है । (3) कहते हैं कि आख़िर हमें मरना है मगर काम ऐसे करते हैं जैसे उन्हें कभी मरना ही नहीं ।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 45, मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

है यहां से तुझ को जाना एक दिन *क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन*
मुंह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन *अब न ग़फ़्लत में गंवाना एक दिन*
एक दिन मरना है आख़िर मौत है *कर ले जो करना है आख़िर मौत है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज वाक़ेई हमारी ह़ालत येह होती जा रही है कि हम दुन्या कमाने के लिये तो बहुत कोशिश करते हैं मगर फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल रहते हैं, दिन रात मालदार बनने के सुनेहरे ख़्वाब तो देखते हैं, उ़म्दा गाड़ियों में घूमने, नित नए फ़ैशन अपनाने के लिये कोशां रहते हैं मगर हम येह भूल जाते हैं कि एक दिन हमें मरना भी पड़ेगा और इस हंस्ती बस्ती दुन्या को छोड़ कर ख़ाली हाथ यहां से जाना होगा मगर हम में से किसी को मा'लूम नहीं कि हमारी मौत कब आएगी ? आज का दिन हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन होगा या आने वाली रात हमारी ज़िन्दगी की आख़िरी शब होगी ? बल्कि हमारे पास तो इस की भी ज़मानत नहीं कि एक के बा'द दूसरा सांस भी ले पाएंगे या नहीं ? मुमकिन है जो सांस हम ले रहे हैं वोही आख़िरी हो, दूसरा सांस लेने की नौबत ही न आए। आए दिन येह ख़बरें हमें सुनने को मिलती हैं कि फ़ुलां शख़्स बिल्कुल ठीक ठाक था, उसे ब ज़ाहिर कोई मरज़ भी न था लेकिन अचानक दिल का दौरा पड़ने की वज्ह से चन्द ही लम्ह़ों में मौत के घाट उतर गया।

आइये ! ख़ुद को ग़फ़्लत से जगाने के लिये दो इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त सुनते हैं। **ऐ काश** ! हम गुनाहों से सच्ची और पक्की तौबा कर के नेकियों में मश्ग़ूल हो जाएं।

﴾1﴿...सैलाब में ग़र्क़ हो गया

मन्क़ूल है : एक शख़्स ने सैलाब (Flood) आने की जगह अपना घर बना रखा था। जब उस से कहा गया कि येह बहुत ख़त़रनाक जगह है, यहां से हट जाओ। तो उस ने कहा : मुझे मा'लूम है कि येह जगह ख़त़रनाक है लेकिन इस की ख़ूब सूरती व शादाबी ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया है। उस से कहा गया कि तमाम रौनक़ें और ख़ूब सूरतियां ज़िन्दगी के साथ हैं, लिहाज़ा

www.dawateislami.net

अपनी जान की ह़िफ़ाज़त कर ! अपने आप को ख़त़रे में न डाल । उस ने कहा : मैं येह जगह हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा । फिर एक रात ह़ालते नींद में उसे सैलाब ने आ लिया और वोह ग़र्क़ हो कर मर गया । (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 446)

﴾2﴿...शादी के अरमान ख़ाक में मिल गए

सरदाराबाद के मेडीकल कॉलेज के फ़ाइनल इयर का एक ज़हीन तरीन त़ालिबे इ़ल्म अपने दोस्त के हमराह पिक्निक मनाने चला, पिक्निक पोइन्ट पर पहुंच कर उस का दोस्त नदी में तैरने के लिये उतरा मगर डूबने लगा, मुस्तक़्बिल के डॉक्टर ने उस को बचाने की ग़रज़ से जज़्बात में आ कर पानी में छलांग लगा दी, अब वोह तैरना तो जानता नहीं था, लिहाज़ा ख़ुद भी फंस गया । क़िस्मत की बात कि उस का दोस्त तो जूं तूं कर के निकलने में कामयाब हो गया मगर आह ! मुस्तक़्बिल का डॉक्टर बेचारा डूब कर मौत के घाट उतर गया । कोहराम मच गया, मां-बाप के बुढ़ापे का सहारा पानी की मौजों की नज़्र हो गया, मां-बाप के सुहाने सपने शर्मिन्दए ता'बीर न हो सके और वोह बेचारा ज़हीन त़ालिबे इ़ल्म (Student) M.B.B.S के फ़ाइनल इम्तिह़ान का रिज़ल्ट हाथ में आने से क़ब्ल ही क़ब्र में जा पहुंचा ।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे　　मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुवे नामवर बे निशां कैसे कैसे　　ज़मीं खा गई नौजवां कैस कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है　　येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाइये और फ़िक्रे आख़िरत पैदा कीजिये और मरने से पहले मौत की तय्यारी कर लीजिये । अगर हम यूंही दुन्या की रौनक़ों में मस्त रहे और अचानक किसी मोह्लिक (या'नी हलाक कर देने वाली) बीमारी में मुब्तला हो कर, किसी ह़ादिसे का शिकार हो कर या अचानक ही हमारी सासें रुक गईं और हम मौत के घाट उतर गए, तो फिर सिवाए पछताने के कुछ हाथ नहीं आएगा । लिहाज़ा अ़क़्लमन्दी का मुज़ाहरा करते हुवे हमें अपने दिलो दिमाग़ से येह ख़ुश फ़ेहमी निकाल देनी

www.dawateislami.net

चाहिये कि अभी तो मेरी उ़म्र ही क्या है ? अच्छा भला सिह़्ह़तमन्द इन्सान हूं, अभी तो लम्बी ज़िन्दगी पड़ी है ! आख़िरी उ़म्र में नेकियां कर लूंगा ।

याद रखिये ! मौत सिर्फ़ बुढ़ापे या बीमारी में ही नहीं आती बल्कि अच्छे भले सिह़्ह़तमन्द, हंस्ते खेलते नौजवान भी अचानक मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में चले जाते हैं । इस दुन्या की ह़ैसिय्यत एक गुज़र गाह (या'नी रास्ते) की सी है जिसे तै़ करने के बा'द ही हम मन्ज़िल तक पहुंच सकते हैं । अब वोह मन्ज़िल जन्नत होगी या जहन्नम ! इस का इन्ह़िसार इस बात पर है कि हम ने येह सफ़र किस त़रह़ तै़ किया । **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त गुज़ार बन कर या مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ना फ़रमान बन कर ? अफ़्सोस है ! उस पर जो दुन्या की रंगीनियां देखने के बा वुजूद भी उस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो जाए ।

दुन्या फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सब से आख़िरी ख़ुत़्बा (Last Sermon) जो इरशाद फ़रमाया, उस में येह भी है : **अल्लाह** करीम ने तुम्हें दुन्या सिर्फ़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ आख़िरत की तय्यारी करो, इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक दुन्या फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है । तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे । फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूंकि दुन्या मुन्क़ते़अ़ होने वाली है और बेशक **अल्लाह** पाक की त़रफ़ लौटना है । **अल्लाह** पाक से डरो ! क्यूंकि उस का डर, उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और उस तक पहुंचने का ज़रीआ़ है ।

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، ۵/۸۳، حدیث:۱۴۶، ملخصاً)

चन्द रोज़ा है येह दुन्या की बहार — दिल लगा इस से न ग़ाफ़िल ज़ी नहार
उ़म्र अपनी यूं न ग़फ़्लत में गुज़ार — होश्यार ! ऐ मह़्वे ग़फ़्लत ! होश्यार
एक दिन मरना है आख़िर मौत है — कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी ज़िन्दगी का एक एक लम्ह़ा बड़ा क़ीमती है और हमारी ज़िन्दगी हर आन तेज़ी से कम होती जा रही है। लिहाज़ा अ़क़्लमन्दी का सुबूत देते हुवे इस फ़ानी दुन्या के धोके में मुब्तला हो कर सोने (Gold) और जवाहिरात से ज़ियादा क़ीमती लम्ह़ात की ना क़द्री करने के बजाए तक़्वा व परहेज़गारी अपनाइये, अपने शबो रोज़ को फ़ुज़ूलिय्यात और दुन्यवी ऐश कोशियों में बरबाद मत कीजिये, शरीअ़त ने जिन कामों का हुक्म दिया है उन की अदाएगी में सुस्ती न कीजिये और जिन से मन्अ़ किया है उन से रुक्ने में लम्ह़ा भर भी ताख़ीर न कीजिये।

हमें क़ुरआन व अह़ादीस में नमाज़ का हुक्म दिया गया है मगर हम ग़फ़्लत के सबब नमाज़ नहीं पढ़ते, ह़ालांकि नमाज़ हुक़ूक़ुल्लाह में से इन्तिहाई अहम फ़रीज़ा है। नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, नमाज़ बीमारियों से बचाती है, नमाज़ दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का सबब है और जान बूझ कर नमाज़ छोड़ने वाले का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है। शरीअ़त ने हमें साह़िबे निसाब होने की सूरत में पूरे साल में एक मरतबा अपने माल की ज़कात निकालने का हुक्म दिया है। हम सिर्फ़ माल कमाने में तो मश्ग़ूल हैं, मगर उस का ह़क़ अदा करने से ग़ाफ़िल हैं, ह़ालांकि ज़कात देने से माल में बरकत होती है, ज़कात देने से घर में अम्नो सुकून होता है, ज़कात देने वाले पर रह़मते इलाही की छमाछम बरसात होती है, ज़कात देने से मुसीबतें दूर होती हैं। जैसा कि :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, तो **अल्लाह** पाक ने उस से शर को दूर कर दिया।

(المعجم الاوسط، باب الالف من اسمه احمد، الحدیث، ١٥٧٩، ج١، ص٤٣١)

शरीअ़त ने हमें साल में एक बार रमज़ान के रोज़े रखने का हुक्म दिया मगर बा'ज़ नादान ग़फ़्लत से काम लेते हैं और रोज़ा छोड़ने के साथ साथ सरे आ़म खाते, पीते ज़रा शर्म नहीं करते। याद रखिये ! रोज़ा रखने में जहां शरीअ़त की फ़रमां बरदारी है, वहीं इस के ढेरों त़िब्बी फ़वाइद भी हैं। मसलन रोज़ा रखने से मे'दे की तकालीफ़ और इस की बीमारियां ठीक हो जाती हैं

www.dawateislami.net

और निज़ामे हज़्म बेहतर हो जाता है, रोज़ा शूगर लेवल, कोलेस्ट्रोल और ब्लड प्रेशर में ए'तिदाल लाता है और इस की वज्ह से दिल का दौरा पड़ने का ख़त़रा नहीं रहता, रोज़े के दौरान ख़ून की मिक्दार में कमी हो जाती है और इस की वज्ह से दिल को इन्तिहाई फ़ाइदा मन्द आराम पहुंचता है, रोज़े से जिस्मानी खिचाव, ज़ेह्नी तनाव, डिप्रेशन और नफ़्सियाती अमराज़ का ख़ातिमा होता है, रोज़ा रखने से मोटापे में कमी वाक़ेअ़ होती और इज़ाफ़ी चर्बी ख़त्म हो जाती है, रोज़ा रखने से बे औलाद ख़्वातीन के हां औलाद होने के इमकानात (Possibilities) कई गुना बढ़ जाते हैं । (सिरातुल जिनान, 1 / 293)

रोज़े के तफ़्सीली अह़काम और फ़ज़ाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम)**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद रहेगा । इस के इ़लावा शरीअ़त ने जिन कामों का हुक्म दिया उन के फ़ज़ाइल जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" और जिन कामों से बचने का हुक्म दिया उन की तबाहकारियां जानने के लिये "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" (जिल्द 1 और 2) का मुत़ालआ़ कीजिये ।

मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो !
नेकियां कीजिये, न ग़फ़्लत कीजिये

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 509)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दौरा"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें न सिर्फ़ ख़ुद अपनी ज़िन्दगी रब्बे करीम की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में बसर करनी चाहिये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों में फ़िक्रे आख़िरत पैदा करने के लिये उन्हें भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करना चाहिये और नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेना चाहिये । 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार मदनी काम "**मदनी दौरा**" भी है, जिस के ज़रीए़ घर घर, दुकान दुकान लोगों को नेकी की दा'वत दी जाती है ।

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत देना तो ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام बल्कि खुद सय्यिदुल अम्बिया, मह़बूबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी मक़्सद के लिये दुन्या में भेजा गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी काम के बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद (Benefits) हैं। ❖ मदनी दौरे की बरकत से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत देने वाली सुन्नत पर अ़मल हो जाता है। ❖ मदनी दौरे की बरकत से मुसलमानों से मुलाक़ात व सलाम की सुन्नत आ़म होती है। ❖ मदनी दौरे की बरकत से इ़ल्मे दीन और नेकी की दा'वत से माला माल क़ीमती मदनी फूल उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाए जाते हैं। ❖ मदनी दौरे की बरकत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने में बहुत मदद ह़ासिल होती है। ❖ मदनी दौरे की बरकत से दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की तश्हीर व नेक नामी होती है और जो इस्लामी भाई मदनी दौरे में शिर्कत करते हैं, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन को दुआ़ए मदीना से यूं नवाज़ रहे हैं :

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 369)

आइये ! बत़ौरे तरग़ीब मदनी दौरे की एक मदनी बहार सुनिये और पाबन्दी के साथ मदनी दौरा करने की निय्यत कीजिये। चुनान्चे,

मस्जिद आबाद हो गई

बाबुल मदीना के एक इस्लामी भाई का बयान है कि हमारा मदनी क़ाफ़िला मुल्के मुर्शिद के एक शहर की मस्जिद में पहुंचा, दरवाज़े पर ताला लगा हुवा था, कोशिश कर के चाबी ह़ासिल की, दरवाज़ा खोला, तो हर चीज़ पर मिट्टी ही मिट्टी थी, ऐसा मा'लूम होता जैसे काफ़ी अ़र्से से मस्जिद बन्द हो। हम ने मिल जुल कर सफ़ाई की, नमाज़े अ़स्र के बा'द मदनी दौरे के लिये खेल के मैदान में पहुंचे और खेलने में मश्ग़ूल नौजवानों को नेकी की दा'वत दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई नौजवान हाथों हाथ हमारे साथ चलने के लिये

www.dawateislami.net

तय्यार हो गए, मस्जिद में आ कर हमारे साथ नमाज़ पढ़ने और सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, हमारी इनफ़िरादी कोशिश से उन्हों ने उस मस्जिद को आबाद करने की निय्यत कर ली । येह मन्ज़र देख कर वहां मौजूद 70 साला एक बुज़ुर्ग आबदीदा हो कर कहने लगे : मैं तो लोगों से मस्जिद आबाद करने का कहता रहता था मगर मेरी सुने कौन ? اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आज आ़शिक़ाने रसूल के मदनी दौरे के बरकत से हमारी मस्जिद आबाद हो गई है ।

न नेकी की दा'वत में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 103)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने की ईंट

मन्क़ूल है कि एक नेक आदमी को कहीं से सोने की ईंट हाथ लग गई, वोह दौलत की मह़ब्बत में मस्त हो कर रात भर त़रह़ त़रह़ के मन्सूबे बांधता रहा कि अब तो मैं बहुत अच्छे अच्छे खाने खाऊंगा, बेहतरीन लिबास सिलवाऊंगा और बहुत सारे ख़ुद्दाम अपनाऊंगा । अल ग़रज़ ! मालदार बन जाने के सबब वोह राह़तों और आसाइशों के तसव्वुरात में गुम हो कर उस रात रब्बे अक्बर से यक्सर ग़ाफ़िल हो गया । सुब्ह़ इसी धन की धुन में मगन मकान से निकला, इत्तिफ़ाक़न क़ब्रिस्तान (Graveyard) के क़रीब से उस का गुज़र हुवा, क्या देखता है कि एक शख़्स ईंटें बनाने के लिये एक क़ब्र पर मिट्टी गूंद रहा है । येह मन्ज़र देख कर यक्दम उस की आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हट गया और इस तसव्वुर से उस की आंखों से आंसू जारी हो गए कि शायद मरने के बा'द मेरी क़ब्र की मिट्टी से भी लोग ईंटें बनाएंगे । **आह** ! मेरे आ़लीशान मकानात और उ़म्दा मल्बूसात वग़ैरा धरे के धरे रह जाएंगे, लिहाज़ा सोने की ईंट से दिल लगाना तो ज़िन्दगी को सरासर ग़फ़्लत में गंवाना है । हां ! अगर दिल लगाना ही है, तो मुझे अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** से दिल लगाना चाहिये । चुनान्चे, उस ने सोने की ईंट को छोड़ कर क़नाअ़त को इख़्तियार किया ।

(रिसाला : ग़फ़्लत, स. 1)

www.dawateislami.net

गो पेशे नज़र क़ब्र का पुर हौल गढ़ा है
अफ़्सोस ! मगर फिर भी येह ग़फ़्लत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 382)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मालो दौलत ऐसी चीज़ है जो इन्सान को रब्बे करीम से ग़ाफ़िल कर देती है। इस ह़िकायत में हर वक़्त मालो दौलत की ह़िर्स (Greed) में मुब्तला रहने वालों, जम्ए़ माल की हवस में ह़लाल व ह़राम की तमीज़ भुला देने वालों और सिर्फ़ मालो दौलत में ज़िन्दगी का सुकून तलाश करने वालों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

याद रखिये ! दौलत से दवा तो ख़रीदी जा सकती है, शिफ़ा नहीं ! दौलत से दोस्त तो मिल सकते हैं मगर वफ़ा नहीं ! दौलत के सबब अच्छी ज़िन्दगी तो गुज़ारी जा सकती है मगर इस के ज़रीए़ मौत नहीं टाली जा सकती ! दौलत से शोहरत तो ह़ासिल हो सकती है मगर इ़ज़्ज़त नहीं ! दौलत से अच्छे मकानात, गाड़ियां और उ़म्दा मल्बूसात तो ख़रीदे जा सकते हैं मगर इसे ग़लत़ कामों में इस्ति'माल कर के रब्बे करीम की रिज़ा और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त की ह़क़दार नहीं बन सकते !

याद रखिये ! दुन्या में हर मुश्किल काम को आसान बनाने के लिये तो शायद हमारी दौलत काम आ सकती है मगर हमारी बद आ'मालियों के सबब क़ब्र में अ़ज़ाब दिया गया, तो क्या वहां भी येही दौलत काम आएगी ? मुन्कर नकीर के सुवालात नहीं बन पाए, तो क्या उस वक़्त भी हम अपनी दौलत से नफ़्अ़ उठा सकेंगे ? क़ब्र में सांप, बिच्छू ह़म्ला आवर हो गए, तो क्या हमारी दौलत इन से नजात का सबब बन सकेगी ? बरोज़े मह़्शर की हौलनाकियों में क्या हमारी दौलत राह़त व सुकून का सबब बन सकेगी ? क्या जहन्नम से छुटकारा पाने के लिये हमारी दौलत काम आ सकेगी ? नहीं ! हरगिज़ नहीं ! बल्कि इन मुश्किल ह़ालात से निमटने के लिये हमारे वोह नेक आ'माल ही नजात का ज़रीआ़ बनेंगे जिन से आज हम ग़ाफ़िल हैं।

www.dawateislami.net

मैं कैसे ख़ुश रहूं ?

हज़रते सय्यिदुना औन बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते कि अफ़्सोस ! मैं कितनी ग़फ़्लत करता हूं ! हालांकि मुझ से हि़साबो किताब में हरगिज़ ग़फ़्लत नहीं बरती जाएगी । मेरी ज़िन्दगी क्यूं कर ख़ुश गवार हो सकती है ? हालांकि मेरे सामने एक कठिन दिन है । मैं अ़मल में चुस्ती क्यूं इख़्तियार नहीं करता ? हालांकि मैं नहीं जानता कि मेरी मौत का वक़्त क्या है ? मैं दुन्या में कैसे ख़ुश रहूं ? हालांकि मुझे यहां हमेशा नहीं रहना । मैं इसे तरजीह़ क्यूं दूं ? मुझ से पहले जिस ने भी दुन्या को तरजीह़ दी, दुन्या ने उसे नुक़्सान पहुंचाया । मैं इसे क्यूं पसन्द करूं ? येह तो फ़ना हो कर मिट जाएगी । मैं इस की हि़र्स क्यूं रखूं ? क्यूंकि मेरा ठिकाना तो कहीं और है । मैं इस (दुन्या के चले जाने) पर क्यूं अफ़्सोस करूं ? क्यूंकि **अल्लाह** पाक की क़सम ! मैं नही जानता कि मेरे गुनाहों की वज्ह से मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा ?

(حلیۃ الاولیاء، عون بن عبداللہ، ۴/۲۸۵، رقم: ۵۵۹۳، بتصرف)

ग़फ़्लत से बचने के त़रीक़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन ख़ुद को ग़फ़्लत व हि़र्स से बचाने के लिये हर वक़्त फ़िक्रे आख़िरत में मश्ग़ूल रहते थे । हमें भी उन की सीरत पर चलते हुवे ज़िन्दगी में ही क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी शुरूअ़ कर देनी चाहिये और ग़फ़्लत जैसी बीमारी से नजात के लिये इस का इ़लाज करना चाहिये क्यूंकि हर बीमारी से बचने के लिये त़रीक़ए इ़लाज इख़्तियार किया जाता है, जिस पर अ़मल कर के शिफ़ा हो जाती है । आइये ! ग़फ़्लत जैसी मोह्लिक बीमारी से बचने के चन्द त़रीक़े (Methods) सुनते हैं और अपनी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये आज और अभी से निय्यत करते हैं कि हम ग़फ़्लत से जान छुड़ा कर आख़िरत की तय्यारी के लिये भरपूर कोशिश करेंगे । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾1﴿...दुन्यावी मह़ब्बत से बचना

फ़ी ज़माना नेकियों से दूर होने और ग़फ़्लत के गहरे घड़े में जा पड़ने का एक अहम सबब दुन्या की मह़ब्बत है जो इन्सान को ह़लाल व ह़राम की

www.dawateislami.net

तमीज़ भुला कर नेकियों से दूर कर देती है । लिहाज़ा अपने दिल से दुन्यावी महब्बत निकाल दीजिये क्यूंकि येही सारे फ़साद की जड़ है ।

हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे दुन्या की महब्बत का शरबत पिलाया गया, वोह तीन चीज़ों का मज़ा ज़रूर चखेगा । (1) ऐसी सख़्ती जिस से उस की थकन दूर न होगी । (2) ऐसी हिर्स जिस से वोह ग़नी न होगा । (3) ऐसी ख़्वाहिश जिस की तक्मील न कर सकेगा । लिहाज़ा जिस ने दुन्या को तलब किया, आख़िरत उस के मरने तक उसे तलाश करती रहेगी, जब वोह मर जाएगा, तो वोह उसे पकड़ लेगी और जिस ने आख़िरत तलब की, दुन्या उसे ढूंडती रहेगी, यहां तक कि वोह उस में से अपना पूरा रिज़्क़ हासिल कर ले । (طبرانی کبیر، عبداللہ بن مسعود، ۱۰/ ۱۲۲، رقم: ۱۰۳۲۸، ملتقطا)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿...अच्छी सोह़बत इख़्तियार करना

ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी से पीछा छुड़ाने के लिये नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये कि इस की बरकत से हमें गुनाहों से बचने और नेकियां करने की तौफ़ीक़ मिलेगी । फ़ी ज़माना दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल अच्छी सोह़बत पाने के लिये किसी ने'मते उज़्मा से कम नहीं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माहोल की बरकत से अब तक लाखों मुसलमान गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेकियां करने वाले बन गए । लिहाज़ा हमें भी बुरी सोह़बत से बचना चाहिये कि बुरी सोह़बत हमारी दुन्या के साथ साथ बरबादिये आख़िरत का सामान बन सकती है ।

अहादीसे मुबारका में बुरे लोगों की सोह़बत से बचने का हुक्म है । चुनान्चे, इस बारे में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और अमल की कोशिश कीजिये ।

www.dawateislami.net

1. इरशाद फ़रमाया : बुरे साथी से बचो ! क्यूंकि वोह जहन्नम का एक टुक्ड़ा है, उस की महब्बत तुम्हें फ़ाइदा नहीं पहुंचाएगी और वोह तुम से अपना वा'दा पूरा नहीं करेगा। (فردوس الاخبار، ۱/۲۲۴، حدیث: ۱۵۷۳)
2. इरशाद फ़रमाया : बुरे साथी से बच ! कि तू उसी के साथ पहचाना जाएगा (या'नी जैसे लोगों के पास आदमी की निशस्त व बरख़ास्त होती है, लोग उसे वैसा ही जानते हैं)। (ابن عساکر، الحسین بن جعفر بن محمد بن حمدان ۔۔ الخ، ۱۴/۴۶)

﴾3﴿...बुज़ुर्गाने दीन की सीरत का मुत़ालआ़ करना

ग़फ़्लत और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से जान छुड़ाने, नेकियों का पाबन्द बनने, कु़रआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का एक त़रीक़ा बुज़ुर्गाने दीन की सीरते मुबारका का मुत़ालआ़ करना और उन की सीरत व किरदार के मुत़ाबिक़ अ़मल करना भी है क्यूंकि हमारे बुज़ुर्गाने दीन हर वक़्त इ़बादते इलाही और फ़िक्रे आख़िरत में मसरूफ़ रहते।

ऐसी ही एक हस्ती जिन के इ़ल्मो अ़मल, किरदार और सीरते मुबारका का मुत़ालआ़ करने से ग़फ़्लत से बच कर फ़िक्रे आख़िरत नसीब होती है। वोह हस्ती आ़लिमे बा अ़मल, सूफ़िये बा सफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते मुबारका भी है, जिन का हर लम्ह़ा यादे इलाही और फ़िक्रे आख़िरत में बसर होता था। आप ने अपने इ़ल्मी शौक़ और क़ाबिलिय्यत व सलाहिय्यत से ऐसे ऐसे कारनामे अन्जाम दिये कि आप की ता'लीमात से आज भी आ़लमे इस्लाम मुनव्वर हो रहा है। आप की मुबारक ज़िन्दगी से उम्मते मुस्लिमा को इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी, सुन्नतों की पासदारी, ज़ोह्दो तक़्वा और दीगर बहुत सी नेक ख़स्लतें अपनाने का जज़्बा मिलता है। आइये ! हुसूले बरकत और नुज़ूले रह़मत के लिये आप की मुबारक ज़िन्दगी के चन्द मुख़्तसर गोशों के बारे में सुनते हैं।

नाम व नसब, विलादत और रिह़्लत

आप की कुन्यत **अबू ह़ामिद**, लक़ब **हुज्जतुल इस्लाम** (या'नी इस्लाम की दलील) और नामे नामी, इस्मे गिरामी **मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली शाफ़ेई** है। आप सिने 450 हि. में ईरान के ज़िलअ़ तूस के अ़लाक़े

www.dawateislami.net

त़ाबिरान में पैदा हुवे । (اتحاف السادۃالمتقین،مقدمۃ الکتاب،۱/۹) इब्तिदाई ता'लीम अपने शहर में ह़ासिल की, मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्म के लिये (ईरान के मशि्रक़ी शहर) जुरजान तशरीफ़ ले गए । 473 हिजरी में (ईरान के क़दीम शहर) नैशापूर में इ़ल्म में मुकम्मल महारत ह़ासिल की । (اتحاف السادۃالمتقین،مقدمۃ الکتاب،۱/۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हर तस्नीफ़ ही इ़ल्मो इ़रफ़ान का बेश बहा ख़ज़ाना है मगर "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" "**कीमियाए सआ़दत**" "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" वग़ैरा मगर "**इह़याउल उ़लूम**" ऐसी किताब है जिस की मिसाल किताबों में मिलना मुश्किल है । येह किताब इन्सान को "**कामिल इन्सान**" बनाने में बेह़द मुआ़विन है, हर दौर में मशाइख़ व आ़रिफ़ीन, अक़्त़ाब व औलिया और उ़लमा व सूफ़िया की तवज्जोह का मर्कज़ रही है । बिल आख़िर इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बरोज़ पीर, 14 जुमादल उख़रा, सिने 505 हि., ब मक़ाम त़ाबिरान (त़ूस) में इस दुन्याए फ़ानी से इन्तिक़ाल फ़रमा गए और वहीं आप का मज़ारे मुबारक है ।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसी अ़ज़ीम हस्तियों की ता'लीमात को उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने 1986 में आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का आग़ाज़ फ़रमाया । दा'वते इस्लामी के इस शो'बे (Department) से पहले तो सिर्फ़ बयानात की ऑडियो केसेटें जारी हुईं और फिर **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम और रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से ऐसी तरक़्क़ी नसीब हुई कि मक्तबतुल मदीना से सुन्नतों भरे बयानात, मदनी मुज़ाकरे दुन्या भर में पहुंच रहे हैं । इस के इ़लावा इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताबों का उर्दू तर्जमा, आ'ला ह़ज़रत व अमीरे अहले सुन्नत और अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताबें भी शाएअ़ कर के कसीर ता'दाद में अ़वाम के हाथों में पहुंचाई जा रही हैं ।

मक्तबतुल मदीना के क़ियाम का मक़्सद कारोबार नहीं बल्कि दुन्या भर के आ़शिक़ाने रसूल तक इ़ल्मे दीन पहुंचाना है । मक्तबतुल मदीना दा'वते इस्लामी का इशाअ़ती इदारा है, इस का नफ़्अ़ व नुक़्सान किसी का ज़ाती नहीं बल्कि तन्ज़ीमी है । आ़शिक़ाने रसूल और ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी को चाहिये कि हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में इस का बस्ता लगाएं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम ने ग़फ़्लत के मुतअ़ल्लिक़ सुना कि ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान इ़ल्मे दीन से दूर हो जाता है । ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान अपनी आख़िरत को भूल जाता है । ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान गुनाहों में मुलव्वस हो जाता है । ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान जहन्नम के गहरे घड़े में जा गिरता है । ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान यादे इलाही और इत़ाअ़ते इलाही से दूर हो जाता है । ❖ ग़फ़्लत के सबब इन्सान हर वक़्त मालो दौलत कमाने की ह़िर्स में मुब्तला रहता है । **अल्लाह** करीम हमें नेक आ'माल करने और ग़फ़्लत से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، الفصل الثانى، ١/٥٥، حديث: ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم **:** जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है, गोया वोह सुवार होता है (या'नी कम थकता है)। (مُسلِم، ص۱۱۶۱ حدیث۲۰۹۶)

❖ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो, तो निकल जाए। ❖ पहले सीधा जूता पहनिये फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारिये फिर सीधा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم **:** जब तुम में से कोई जूते पहने, तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे, तो बाईं (या'नी उल्टी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بُخاری ج۴ ص۶۵ حدیث۵۸۵۵)

❖ **नुज़्हतुल क़ारी** में है **:** मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है कि पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले, तो पहले उल्टा पाउं निकाले, मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है। आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने इस का ह़ल येह इरशाद फ़रमाया है **:** जब मस्जिद में जाना हो, तो पहले उल्टे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हो जाइये और जब मस्जिद से बाहर हो, तो उल्टा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उल्टा पहन लीजिये। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 5, स. 530, फ़रीद बुक स्टॉल) ❖ मर्द, मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे। ❖ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया **:** रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत

फ़रमाई है । (اَبُو دَاوٗد ج ۴ ص ۸۴ حدیث ۴۰۹۹) ❖ सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता हो, उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है । न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (या'नी त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 65, मक्तबतुल मदीना)

❖ जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं ।
❖ (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना । "**दौलते बे ज़वाल**" में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा, तो शैत़ान उस पर आ कर बैठता है, वोह उस का तख़्त है ।

(सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सा 5, स. 601)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" इस के इलावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 635)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

《1》 शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

《2》 तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

《3》 रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲۷۷)

《4》 दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۱۲۵)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र ह़ासिल कर ली। (تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1163-1164)

www.dawateislami.net